आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2621 • उदयपुर, रविवार 27 फरवरी, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

चल पड़ी थमी हुई जिन्दगी

नरवाणा– हरियाणा के जींद जिले के नरवाना शहर में निःशुल्क कृत्रिम अंग वितरण शिविर आयोजित किया गया। संस्थान की नरवाना शाखा के तत्वावधान में सम्पन्न शिविर में 37 दिव्यांगों को कृत्रिम हाथ–पैर तथा 25 को कैलीपर लगाए गए। मिलन पैलेस में आयोजित शिविर के मुख्य अतिथि महंत श्री अजयगिरि जी महाराज थे। अध्यक्षता नगर परिषद के पूर्व अध्यक्ष श्री भारत भूषण जी गर्ग ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. जय सिंह जी गर्ग, श्री प्रवीण जी मित्तल व राकेश जी शर्मा मंच पर बिराजे थे। स्थानीय शाखा के प्रभारी श्री राजेन्द्र जी गर्ग ने अतिथियों का स्वागत किया। कृत्रिम अंग लगाने का कार्य संस्थान के टेक्नीशियन श्री भंवरसिंह जी व श्री नरेश जी वैष्णव ने किया। संचालन श्री हरिप्रसाद जी लढ्ढा ने जबकि व्यवस्था में श्री मुन्नासिंह जी, भरत कुमार जी व रामसिंह जी ने सहयोग किया।

छतरपुर– केयर इंग्लिश स्कूल, छतरपुर (मध्यप्रदेश) में आयोजित शिविर में 39 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग (हाथ–पैर) व 9 को कैलिपर प्रदान किए गए। मुख्य अतिथि डॉ. रामकुमार जी अवस्थी थे। जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में उनके साथ मंच पर रॉटरी क्लब

के सचिव श्री स्वतंत्र जी शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री मुकेश जी सोनी, इनव्हील क्लब की अध्यक्ष श्रीमती ज्योति जी चौबे समाजसेवी श्री पंकज कुमार जी, व श्री उमेश जी ललवानी मौजूद थे। अध्यक्षता रॉटरी क्लब के अध्यक्ष श्री मुकेश जी चौबे ने की।

गुरुग्राम– वैश्य समाज की सेक्टर–4

स्थित धर्मशाला में सम्पन्न दिव्यांग जांच, ऑपरेशन, चयन, कृत्रिम अंग माप एवं सहायक उपकरण वितरण शिविर से बड़ी संख्या में दिव्यांग भाई–बहन लाभान्वित हुए। मित्सुबिशी इलेक्ट्रिक ऑटोमोटिव इंडिया प्रा. लिमिटेड के प्रतिनिधि श्री विशाल जी नागदा के मुख्य अतिथ्य में सम्पन्न शिविर में 20 दिव्यांगों को ट्राइसाइकिल, 10 को व्हीलचेयर, 10 को बैसाखी जोड़ी प्रदान की गई। जबकि 10 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग व कैलिपर लगाने के लिए मेजरमेंट लिया गया। चार दिव्यांगों का पोलियो सुधार के लिए निःशुल्क ऑपरेशन हेतु चयन किया गया। शिविर की अध्यक्षता समाजसेवी श्री रघुनाथ जी गोयल ने की। विशिष्ट अतिथि श्री रमेश जी सिंगला थे। दिव्यांगों का चयन डॉ. एस. एल. गुप्ता, टेक्निशियन नाथूसिंह जी व किशनलाल जी ने किया। अतिथियों का स्वागत स्थानीय आश्रम प्रभारी श्री गणपत जी रावल ने जबकि संचालन श्री अखिलेश अग्निहोत्री ने किया।

कांगड़ा– हिमाचल प्रदेश में कांगड़ा जिले के ज्वालाजी नगर में कृत्रिम अंग वितरण शिविर आयोजित किया गया। मातृ सदन सरस्वती विद्यालय परिसर के निकट सम्पन्न शिविर में 28 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग (हाथ–पैर) तथा 40 के पांवों में कैलिपर लगाए गए।

टेक्नीशियन श्री नरेश जी वैष्णव व श्री किशन जी लौहार ने माप के अनुसार कृत्रिम अंग फिट किए। मुख्य अतिथि पूर्व मुख्यमंत्री श्री प्रेमकुमार जी धूमल थे। अध्यक्षता राज्य के पूर्व मंत्री श्री रमेश जी घवाला ने की। मंच पर विशिष्ट अतिथि के रूप में नारायण सेवा संस्थान की हमीरपुर शाखा के संयोजक श्री रसीलसिंह जी मानकोटिया, पत्रकार श्री संजय जी जोशी, पूर्व मंत्री श्री रवीन्द्र जी रवि, समाजसेवी श्री पंकज जी शर्मा व श्री रामस्वरूप जी शास्त्री मौजूद थे। शिविर प्रभारी अखिलेश अग्निहोत्री ने अतिथियों का स्वागत एवं श्री रमेश जी मेनारिया ने आभार व्यक्त किया।

अद्भुत है यह मानव शरीर

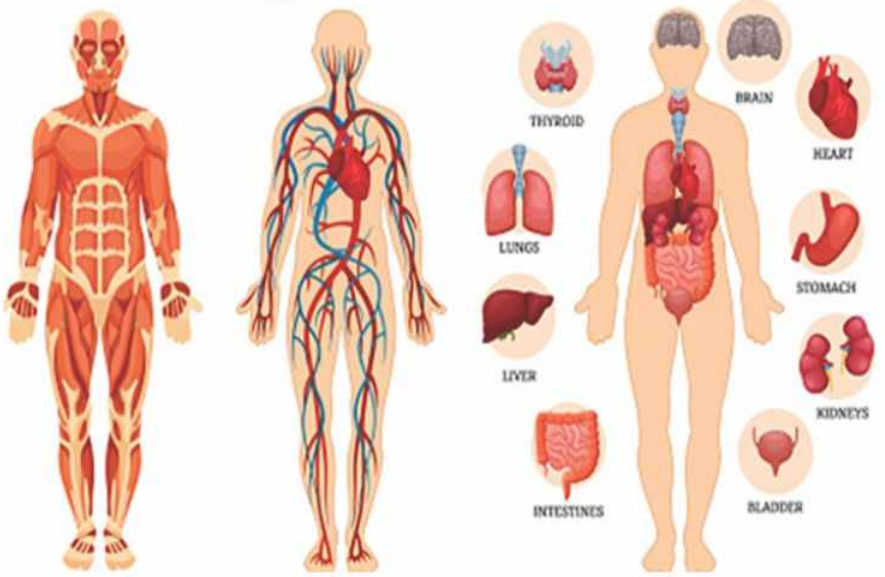

दुनिया के बहुत सारे रहस्यों में से एक रहस्य मानव शरीर भी है। रहस्यों की खान हमारा यह शरीर कैसे कार्य करता है? आइए लेख से जानते हैं। कई बार दिल में ख्याल आता है कि इस शरीर से हम कितने काम लेते हैं। आखिर इस मानव शरीर के अंदर है क्या ? आइए जानें ऐसे ही सवालों के जवाब। शरीर में समस्त ऊर्जा का आधा भाग केवल सिर के द्वारा खर्च होता है।

स्वयं सांस रोककर रखने से किसी मनुष्य की मौत नहीं होती। मानव शरीर में आंख की पुतली का आकार जन्म से लेकर मृत्युपर्यंत एक जैसा रहता है।

हम एक दिन में लगभग 20 हजार बार पलकें झपकाते हैं। दो सेकंड में आने जाने वाली छींक को नाक तक पहुंचने में 160 किमी प्रति घंटे का सफर तय करना पड़ता है। इसकी रफ्तार एक भागती हुई ट्रेन की गति के बराबर होती है। एक निरोगी मनुष्य के शरीर से लगभग सवा लीटर पसीना प्रतिदिन निकलकर हवा में उड़ जाता है।

जब हम सोते हैं तो हम पूरे समय गहरी नींद में होते हैं, पर ये सच नहीं है। 8 घंटे की नींद में 60 प्रतिशत तो हम कच्ची नींद में होते हैं। 18 प्रतिशत गहरी नींद लेते हैं, तो 20 प्रतिशत सपने देखने में निकाल देते हैं।

साबित हो चुका है कि सोते वक्त हमारा दिमाग टीवी देखने की तुलना में ज्यादा सक्रिय होता है।

हमारा दायां फेफड़ा बाएं फेफड़े से बड़ा होता है। ऐसा दिल के स्थान और आकार के कारण होता है। एक सामान्य व्यक्ति अपने साठ वर्ष के जीवनकाल में करीब एक लाख किलोमीटर पैदल चल लेता है। मनुष्य एक सांस में 500 मिलीमीटर हवा खींच सकता है।

ऐसे बनाएं डेली डाइट चार्ट

भोजन में कार्बोहाइड्रेट की मात्रा कितनी हो रही है। इसका ध्यान अवश्य रखें। ब्लड शुगर का स्तर सामान्य रखने के लिए ब्रेकफास्ट, लंच व डिनर में इसकी सही मात्रा होना बेहद जरूरी है। कहीं ऐसा न हो कि आप एक बार के भोजन में काबोहाइड्रेट अधिक ले रहे हों और दूसरे में बिल्कुल नहीं। अपना एक डाइट चार्ट बनाएं ताकि संतुलित मात्रा में कार्ब्स ले। खुद भी डाइट चार्ट बना सकते हैं।

ब्रेकफास्ट (8 से 9 बजे) : एक कप दूध के साथ दलिया। उपमा/पोहा/इडली/मूंग दाल से बना चीला आदि ले सकते हैं।

ब्रंच (सुबह 11 बजे) : कोई एक मौसमी फल या एक कटोरी स्प्राउट्स।

लंच (दोपहर 2 बजे) : ग्रीन सलाद, 2–3 रोटी, एक कटोरी हरे पत्तेदार सब्जी, एक कटोरी दाल और एक कटोरी दही/एक गिलास छाछ।

रिफ्रेशमेंट (शाम4–5 बजे) : उत्तपम/सूखी भेल। खाखरा/फ्रूट सलाद।

डिनर (रात 8 बजे) : ग्रीन सलाद, 2–3 मल्टीग्रेन रोटी, एक कटोरी सब्जी और एक कटोरी दालें वेजिटेबल दलिया/खिचड़ी ले सकते हैं।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ-पांव) माप शिविर
दिनांक व स्थान

27 फरवरी 2022 : मंगलम, शिवपुरी कोर्ट रोड, पोलो ग्राउण्ड के सामने, शिवपुरी, म.प्र.

27 फरवरी 2022 : कृषि उपज मण्डी, ओरछा रोड, पृथ्वीपुर, जिला निवाड़ी, म.प्र.

27 फरवरी 2022 : आर.के.एस.डी. कॉलेज, अम्बाला रोड, कैथल, हरियाणा

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

पू. कैलाश जी 'मानव'

'सेवक' प्रशान्त भैया

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

दिव्यांग एवं निर्धन
सामूहिक विवाह समारोह

YouTube LIVE

दिनांक : 6 मार्च 2022
स्थान : सेवा महातीर्थ बड़ी, उदयपुर

LIVE

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

दिव्यांग एवं निर्धन कन्याओं के बनें धर्म माता-पिता

पूर्ण कन्यादान (प्रति कन्या)
₹ 51,000

आंशिक कन्यादान (प्रति कन्या)
₹ 21,000

पाणिग्रहण संस्कार (प्रति जोड़ा)
₹ 10,000

मेहंदी रस्म (प्रति जोड़ा)
₹ 2,100

Bank Name : State Bank of India
Account Name : Narayan Seva Sansthan
Account Number : 31505501196
IFSC Code : SBIN0011406
Branch : Hiran Magri, Sector No.4, Udaipur-313001

Donate via UPI
Google Pay PhonePe Paytm
narayanseva@sbi

अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय: 483, 'सेवाधाम' सेवा नगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर (राज.) 313002, भारत

+91 294 662 2222, 266 6666 | +91 7023509999

सम्पादकीय

सुख और दुःख अनुभूतियों का खेल है। सच में न तो सुख है और न दुःख। किन्तु व्यक्ति का सारा जीवन दुःख से मुक्ति पाने और सुख की प्राप्ति के प्रयासों में ही पूरा हो जाता है।

सुख और दुःख वस्तुतः दोनों आभासी हैं। इनकी वास्तविकता कुछ भी नहीं है। हमारे मन के अनुरूप जो कार्य नहीं होता वह हमें दुःखी करता है और जो कार्य हमारे मन के अनुसार होता है उससे हमें सुख की अनुभूति होती है।

इसका अर्थ है कि सुख व दुःख केवल मन की दो स्थितियां हैं। लेकिन हम रातदिन अपने मन के अनुसार ही चलने के आदी हो रहे हैं। यह जाने हुए भी कि हमें मंजिल तक पहुँचने में मन ही बाधक या साधक होता है पर हम मन का नियंत्रण सही ढंग से कर नहीं पाते।

प्राचीन काल की शिक्षा, सत्संग, उपदेश, आचरण सभी का सार था मन पर नियंत्रण। मन को घोड़ों की संज्ञा देकर उस पर लगाम लगाने की हर चिंतक व प्रवर्तक ने सलाह दी है, पर उसे आचरण में हमें ही लाना होगा तब हम सुख के बजाय आनंद की खोज में लग सकेंगे।

कुछ काव्यमय

सुख दुःख जीवन के द्वन्द्व हैं,
ये मन की अनुभूतियां हैं।
इस द्वन्द्व से उबरने हेतु
ऋषि-मुनियों ने
सृजित की श्रुतियां हैं।
मन को जीतें तो जीत
हमारी ही होगी।
वरना तो हम
बनके रह जायेंगे भोगी।

सेवा की कहानी : श्री कैलाश मानव की जुबानी

मेरा जन्म 2 जनवरी 1947 को उदयपुर के छोटे से शहर भींडर में हुआ। पिता मदन लाल जी अग्रवाल तथा माता सोहनी देवी जी भक्तिमय जीवन जीते थे। पिता बर्तन की छोटी सी दुकान चलाते थे जिससे जरूरत पूर्ति जितनी आया होती थी। बावजूद इसके वे गरीबों और जरूरतमंदो की मदद करने में सबसे आगे रहते थे। माता–पिता के कारण ही मुझे बचपन से साधु–संतों का सान्निध्य मिला। इसी दौर में महान व्यक्तियों के जीवन पर आधारित पुस्तकें पढ़ी। यहीं कारण थे जिन्होंने मेरे मन में मानव के प्रति करुणा–दया और सेवा का बीज बोया। पढ़ाई में तो अच्छा था ही, सो सिरोही पोस्ट ऑफिस में बाबू की नौकरी लग गई।

1976 की बात है तब सिरोही जिले के पिंडवाड़ा कस्बे में एक बस दुर्घटनाग्रस्त हुई थी। हादसे में मेरे इष्ट मित्र के घायल होने की सूचना मिली तो मौके पर पहुंचा। देखा स्वास्थ्य केन्द्र में इलाज के अभाव में 40 घायल तड़प रहे थे। 7 लोगों की मौत हो चुकी थी।

किसी तरह घायलों को 7 सिरोही अस्पताल पहुंचाया लेकिन वहां भी पर्याप्त सुविधा नहीं थी। किसी को ब्लड की जरूरत थी तो किसी के पास इलाज के पैसे नहीं थे। नौकरी से छुट्टी लेकर मैंने घायलों की सेवा की। रोजाना अस्पताल जाकर देखता था कि इन्हें ठीक से उपचार मिल रहा है या नहीं।

एक दिन अस्पताल में मेरी मुलाकात किशन भील से हुई उसने परोसे गए भोजन का कुछ हिस्सा अलग रखा था। पूछने पर बोला कि मैं भूखा हूँ लेकिन मेरा बेटा और भाई भी साथ है। हमारे पास पैसा नहीं है। इसलिए यह भोजन उनके लिए बचाया है। तभी मेरे मन में प्रश्न उठा की ऐसे बहुत सारे लोग होंगे, इनकी मदद कैसे की जाए? फिर मैने अपने रिश्तेदारों और परिचितों और को नारायण सेवा लिखे हुए कुछ कंटेनर दिये और आग्रह किया कि वे इसमें रोजाना थोड़ा–थोड़ा आटा डालें। इस तरह जमा हुए आटे से मैं और पत्नी तड़के चार बजे उठकर चपातियां बनाते थे। फिर साइकिल पर एम. बी. अस्पताल के मरीजों व अन्य जगह जरूरत मंदों को भोजन करवाने जाता था। बस यही से शुरू हुआ ''नारायण सेवा संस्थान'' का सफर।

एक बार उदयुपर जिले में अकाल पड़ा तो इससे नारायण संस्थान के नाम पर मैंने सम्पन्न लोगों से कपड़े दवाइयाँ, और भोजन सामग्री देने को कहा। यह सामग्री ग्रामीण तथा आदिवासी क्षेत्रों लगे शिविरों में अकाल प्रभावितों को बांटने जाता था। एक बार की बात है शिविरों में भोजन परसोते समय पोलियों ग्रस्त एक व्यक्ति लगभग रेंगता हुआ आया और मुझसे मदद मांगी। कुछ इंतजाम करके मैं उसे ईलाज के लिए मुम्बई ले गया। तभी मन में एक भाव और जागा कि अब दिव्यांगों की भी हर सम्भव मदद करनी चाहिए। इसके बाद पोलियो ग्रस्त कई बच्चों का मैंने मुम्बई में इलाज करवाया चूंकि मुम्बई में इलाज करवाना बहुत ही मंहगा पडता था। इसलिए उदयपुर में अस्पताल का सपना देखा। 1997 में मुम्बई के कारोबारी चैनराज लोढ़ा के वित्तिय सहयोग से 151 बिस्तर वाले '' मानव मन्दिर '' अस्पताल की नींव रखी यहां पोलियो पीड़ितों का निःशुल्क ऑपरेशन व इलाज होने लगा।

मैंने एक ही लक्ष्य रखा कि दिव्यांगों को आत्मनिर्भर बनाना है। कैंसर रोग विशेषज्ञ डॉ. आर. केअग्रवाल साहब और बिसलपुर के राजमल जी जैन साहब ने इस सेवा में बहुत योगदान दिया। 1985 से 2019 तक चार लाख से अधिक दिव्यांगों को मुत ट्राइसाइकल, इतने ही लोगों को व्हीलचेयर दे चुके हूँ।

देश भर से पोलियों करेक्टिव सर्जरी व बेहतर इलाज के लिए आने वाले दिव्यांगों की सेवा के लिए 1100 बेड का अस्पताल है और लोगों को कृत्रिम हाथ पैर लगवाये जा चुके हैं। फिजियोथेरेपी, कैलिपर, कृत्रिम श्रवण यंत्र, दृष्टिहीनों के लिए छड़ी, और कृत्रिम अंग निःशुल्क दिये जाते है। दिव्यांगों बेसहारा मरीजों का ऑपरेशन दवाई, मरीजों के साथ आने वालों का रहना, पौष्टिक भोजन सबकुछ मुत है। यहां पर 125 डॉक्टर और नर्सिंग स्टॉफ द्वारा प्रतिदिन दसियों सर्जरी की जाती है।

दिव्यांग मरीजों को मोबाईल रिपेयरिंग, कम्प्युटर, सिलाई प्रशिक्षण भी हम देते हैं। ताकि वे अपने आजीविका अर्जित कर सकें। नारायण संस्थान अभी तक 2400 दिव्यांगों और निर्धन जोड़ों की शादी करवा चुका है। मैने सपने में भी नहीं सोचा था कि मेरी मानव सेवा की पहल 34 वर्षो में देश भर 4 लाख से ज्यादा दिव्यांगों को नया जीवन देगी।

प्रभु की कृपा से अब तक 3.70 करोड़ लोगों को भोजन करवाने का अवसर मिला है। 1990 में आदिवासी और ग्रामीण इलाकों के बेघर बच्चों को गुणवत्तापर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए एक अनाथालय भी बनाया गया है। दिव्यांगों की सेवा करने वाले नारायण सेवा संस्थान की देश में 480 तथा विदेश में 86 शाखाएं है।

इसकी गिनती आज दुनिया भर के चोटी के गैर लाभकारी संस्थान में होती है। यूं तो मुझे कई पुरस्कार मिले लेकिन राष्ट्रपति डॉक्टर श्री अब्दुल कलाम जी ने व्यक्तिगत क्षमता में उत्कृष्ट सेवा के लिए वर्ष 2003 में राष्ट्रीय पुरस्कार दिया। वहीं पद्श्री पुरस्कार से 2008 में सम्मानित किया गया।

दस वर्ष पूर्व चैन्नई के अस्पताल में आंखों का ऑपरेशन करवाया था, इंफेक्शन में मेरी आँखों की रोशनी पूरी तरह चली गई। इसके बावजूद भी रोगियों से उनके इलाज खाने पीने व रहने के बारे में जानकारियां जब तक पूछ लेता हूँ, मेरा मन नहीं मानता।

जब हमारी आँखें भर आई

आपके हृदय में अगर करुणा, दया, प्यार जैसी कोमल भावनाएं है तो संस्थान में हर कमद पर आँखें नम हो जाएगी। कभी खुशी से कि कोई दिव्यांग अपने पैरों पर खड़ा होकर जा रहा है कभी गम से किसी प्रतीक्षारत दिव्यांग को उदास देखकर....मरीजों के साथ आए उनके परिजनों से जब भी बात शुरू करती हूँ तो सभी का शुरू में बस एक ही वाक्य होता है, भगवान आपको खुश रखें, भगवान उन्नति दे, यहाँ पर सब बहुत अच्छा है, हमारे बच्चे का बहुत अच्छा इलाज हो रहा है।

बहिन जी हमारा एक भी पैसा नहीं लग रहा है .....यह सब कहते – कहते बड़ी उम्र के लोगों के चेहरों पर बच्चों जैसी मासूमियत आ जाती है ..... बात आगे बढ़ने पर सभी मरीजों के अन्दर एक बात,

जो समान रूप से दिखाई देती है, वह– अशिक्षा और गरीबी का दुर्भाग्यपूर्ण मेल ..... इस मेल ने ही इतने मासूमों को पोलियों जैसे राक्षस के हाथों बेच दिया मानो..... जब यह पूछती हूँ कि अभी तक इलाज क्यों नहीं करवाया तो कहते हैं,

बहिन जी दो वक्त रोटी मिल जाए यही जुगाड़ मुश्किल है फिर खर्चीला इलाज कैसे करवाएं बहुत पैसे खर्च होते है, सच ही है, जब पेट ही भरा न हो तो दूसरी समस्याए गौण हो जाती है ..... जब दिव्यांगों को यह पता चलता है कि एक ऐसा संस्थान भी है जहाँ एक पैसा भी खर्च नहीं होगा और हमारा पूरा इलाज हो जाएगा, तो उनकी वे इच्छाएं जिन्हें उस दिव्यांग ने कभी मूर्त रूप देने का स्वप्न में भी नहीं सोचा.....

वे दबी आकाक्षाएं अपने पूरे दम–खम के साथ सच होने को उत्सुक हो जाती हैं और दिव्यांगता बदल जाती है सकलांगता में, सच मानिए उस अपरम्पार खुशी को व्यक्त करने का कोई माध्यम नहीं है, बस जिन्दगी भर वे मुसकराहटें जो उनके पैरों पर चलने की वजह से आई हैं व्यक्त करती है खुशी ताउम्र..... फूलों सी हो गई है जिन्दगी जो बहुत कांटो भरी थी, खुशनुमा हो गया है उनके परिवार का माहौल, जो तनाव भरा था

....अब संकट भी कम परेशान करते हैं क्योंकि उनसे निबटने के लिए पैरों में काफी ताकत है .....यह सब असम्भव हुआ है,

आप सभी के सहयोग की बदौलत, इन्तजार में है अभी भी हजारों दिव्यांग अपने ऑपरेशन की प्रतीक्षा में और हमें जरूरत है, आपके सहयोग की ... . ताकि यह इन्तजार हो सके खत्म .....

– कल्पना गोयल

पैरों पर खड़ी हुई यशोदा

उत्तरप्रदेश के मुरादाबाद जिले में लाईट फिटिंग का कार्य कर परिवार का भरण–पोषण करने वाले राजेन्द्र प्रसाद की बेटी जशोदा (22) जब 12 साल की थी, एक दिन बुखार आया जो उसे पोलियो का दंश देकर ही गया। गरीब माता–पिता के लिए परिवार का भरण–पोषण ही मुश्किल हो रहा था और अब यह आसमान टूट पड़ा। विकलांगता के चलते बच्ची के अनिश्चित भविष्य पर मां–बाप के लिए सिवाय आंसू बहाने के कुछ भी न था।

उम्र के साथ जशोदा की परेशानियां बढ़ती गई। बिना सहारे शरीर को संभालना उसके बस में न था। माता–पिता ने कर्ज लेकर उसके इलाज की हर संभव कोशिश की लेकिन डॉक्टरों के अनुसार स्थिति में सुधार का एकमात्र विकल्प ऑपरेशन था, जिसमें खर्च का जुगाड़ परिवार के पास नहीं था। जशोदा को भी अब दिव्यांगता से छुटकारे की उम्मीद भी नहीं रही। कहते हैं कि जब सब तरफ अंधेरा होता है तब प्रकाश की कोई हल्की सी किरण दिखाई भी दे जाती है। टेलिविजन चैनल के माध्यम से परिवार को नारायण सेवा संस्थान में पोलियो के निःशुल्क ऑपरेशन की जानकारी मिली।

माता–पिता जशोदा को लेकर उदयपुर आए। उसके पोलियोग्रस्त पांव का संस्थान के आर.एल.डिडवानिया हॉस्पीटल में पहला ऑपरेशन हुआ। एक पैर बिल्कुल मुड़ा होने और पीठ में ट्यूमर होने के कारण 7 ऑपरेशन और 9 माह आई.सी. में रहने के बाद और जांघ की चमड़ी को पैर के पंजे पर लगाई तब वो पैर पर खड़ी हुई। सहारा लेकर चलने वाली जशोदा अब कैलीपर के सहारे के चलती हैं। जशोदा ने संस्थान में ही रहकर 3 माह का सिलाई प्रशिक्षण भी लिया। बी.ए. अंतिम वर्ष की छात्रा जशोदा संस्थान के सिलाई केन्द्र में रोजगार पाकर खुश है।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्धटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023